

मूल्य शिक्षा के बदलते आयाम

बीरेंद्र सिंह कुशवाह

सहायक प्राध्यापक इतिहास, शास. महाविद्यालय बदरवास शिवपुरी (म.प्र.)

अमूर्तः

विश्व स्तर पर चरित्र का संकट बढ़ता जा रहा है। मानवीय मूल्य तेजी से मर रहे हैं और आज अपने सबसे निचले स्तर पर हैं। असहिष्णुता बढ़ती जा रही है. बलात्कार और छेड़छाड़ तो रोज की बात है. साथियों का तो जिक्र ही क्या, किशोरों द्वारा भी बड़ों की उपेक्षा की जा रही है और उन पर हमला किया जा रहा है। यहां तक कि माता-पिता और शिक्षकों को भी नहीं बखशा जाता. सवाल उठता है कि इतनी भारी गिरावट क्यों आ रही है? शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली कारक है। मानवीय मूल्यों से रहित शिक्षा ही वर्तमान निराशाजनक परिदृश्य का कारण है। मानवीय मूल्यों वाली शिक्षा ही इस वैश्विक समस्या का समाधान है। यदि अकादमिक प्रबंधक मूल्य शिक्षा में अच्छी तरह से प्रशिक्षित हैं, तो वे निश्चित रूप से प्रारंभिक प्रभावशाली उम्र से अधिक निपुणता के साथ छात्रों के बीच मूल्यों को विकसित करने के तरीके और साधन ढूंढने का प्रयास करेंगे: वह उम्र जब बच्चा एक पौधा होता है जिसे सलाहकार सीधे बढ़ने की सही दिशा सकता है। मूल्य उन बीजों की तरह हैं जो अंकुरित होते हैं, पौधे बनते हैं, पेड़ बनते हैं और अपनी शाखाएँ चारों ओर फैलाते हैं। सही सोचने में सक्षम होना, सही प्रकार की भावनाओं को महसूस करना और वांछनीय तरीके से कार्य करना व्यक्तित्व विकास के प्रमुख चरण हैं। मूल्य प्रणाली का निर्माण व्यक्ति से शुरू होता है, परिवार और समुदाय तक बढ़ता है, प्रणालियों, संरचनाओं और संस्थानों को पुनर्निर्देशित करता है, पूरे देश में फैलता है और अंततः पूरे ग्रह को गले लगाता है। समावेशिता की संस्कृति हमारे समाज, राष्ट्र और शिक्षा को सभी बच्चों का अधिकार बनाने के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोधपत्र मूल्य शिक्षा के बदलते आयामों का विश्लेषण करने का एक प्रयास है। इस उद्देश्य के लिए, शोध द्वितीयक प्रकार के डेटा के उपयोग के साथ किया गया था। द्वितीयक डेटा के रूप में उपलब्ध व्यापक साहित्य की मदद से एकत्र किया गया था यानी पत्रिकाओं, पत्रिकाओं, ई-जर्नल्स, वेबसाइटों, किताबों और समाचार पत्रों आदि को लिया गया है। एकत्रित आंकड़ों की गहन समीक्षा करने के बाद

रोजगार में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्व को समझने के लिए निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण कारकों और नवाचारों का पता चलता है, जिन्हें शोधकर्ताओं और साहित्यकारों द्वारा अपने शोध कार्य में अपनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द: मूल्य शिक्षा, नए आयाम।

परिचय:

'क्या है' के साथ 'क्या होना चाहिए' और 'क्या किया जाना चाहिए', मूल्य शिक्षा की प्रमुख अवधारणाएं हैं। मूल्य शिक्षा मूलतः भावनाओं और संवेगों को शिक्षित करने का मामला है। यह 'हृदय का प्रशिक्षण' है और इसमें सही भावनाओं और भावनाओं को विकसित करना शामिल है। मूल्य शिक्षा केवल कुछ गुणों और आदतों को शामिल करते हुए उचित व्यवहार और आदतों को विकसित करने का मामला है। मूल्य अंत के बारे में अच्छे विचारों की विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें लोगों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। किसी समाज के मूल्य सदस्यों को लक्ष्य या साध्य प्रदान करते हैं। मूल्य लोगों के व्यवहार के लिए एक सामान्य दिशानिर्देश प्रदान करते हैं, उदाहरण के लिए मानवीय गरिमा, मौलिक अधिकार, निजी संपत्ति, देशभक्ति, पत्नी या पति के प्रति निष्ठा, धार्मिकता, त्याग, सहायता, सहयोग, व्यक्तिगत उद्यम, स्वतंत्र वैवाहिक चयन, व्यक्तित्व, सामाजिक समानता, गोपनीयता, लोकतंत्र आदि कई तरीकों से हमारे जीवन का मार्गदर्शन करते हैं।

मूल्य शिक्षा के आयाम: मूल्य शिक्षा को निर्देशित करने के लिए अनेकों आयाम हैं, उनमें से कुछ आयामों पर चर्चा निम्नानुसार है:-

- **सामाजिक आयाम:** भारत एक समाजवादी देश है इसलिए सामाजिक मूल्य इस देश की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। सामाजिक मूल्य, मानदंड और संस्थाएं किसी दिए गए समाज में सामाजिक प्रक्रियाओं के संचालन के तरीके की व्याख्या करती हैं। वे पैटर्नयुक्त अंतःक्रिया के सामाजिक स्रोत हैं। मूल्य सामाजिक व्यवस्था की स्थिरता के लिए जिम्मेदार होते हैं। वे आचरण के लिए सामान्य दिशानिर्देश प्रदान करते हैं। मूल्य वे मानदंड हैं जिनका उपयोग लोग अपने दैनिक जीवन का आकलन करने, अपनी प्राथमिकताओं को व्यवस्थित करने, अपने सुख और दुख को मापने, कार्रवाई के वैकल्पिक तरीकों के बीच चयन करने में करते हैं।
- **शैक्षणिक आयाम:** चूंकि, भारत एक लोकतांत्रिक देश है इसलिए इस देश के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा में भाग लेने का अधिकार है। ठोस तर्क के आधार पर नैतिक निर्णय लेने की क्षमता मूल्य शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य है और इसे जानबूझकर विकसित किया जाना चाहिए। शिक्षा मूल्यों

के विकास का प्रमुख बीज है। यह व्यक्ति को किसी भी बात को तर्क की कसौटी पर कसने में मदद करता है, इसके अलावा शिक्षा व्यक्ति को अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए मजबूत कर सकती है। शिक्षा व्यक्ति को समाज में उचित ढंग से कार्य करने के लिए भी मार्गदर्शन करती है, जिसकी उसे आवश्यकता होती है।

- **स्थानिक आयाम:** भारत में मूल्य शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण पहलू बच्चों में राष्ट्रीय पहचान और देशभक्ति की भावना के विकास से संबंधित है। किसी राष्ट्र को एकीकृत और मजबूत करने के उद्देश्य से यह आवश्यक है, खासकर यदि उसने हाल ही में अपनी स्वतंत्रता हासिल की हो या यदि उसकी सुरक्षा को किसी रूप में खतरा हो। लेकिन राष्ट्रीय पहचान के प्रति यह चिंता कभी-कभी राष्ट्रीय अंधराष्ट्रवाद का रूप ले सकती है और किसी देश के नागरिकों में यह भावना विकसित हो सकती है कि उनका देश हमेशा सही है। इसलिए यह तर्क दिया गया है कि बच्चों को इस तथ्य से अवगत कराना मूल्य शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए कि पूरी दुनिया अब अन्योन्याश्रित देशों का एक समुदाय है और दुनिया के लोगों का अस्तित्व और कल्याण आपसी सहयोग पर निर्भर करता है। बच्चों को विश्व-दृष्टिकोण विकसित करने और विभिन्न संस्कृतियों द्वारा विश्व की प्रगति में किए गए योगदान की सराहना करने में सक्षम बनाया जाना चाहिए और यह एहसास कराया जाना चाहिए कि विभिन्न देशों के मामले में भी इसमें शामिल होना चाहिए।
- **संज्ञानात्मक, रचनात्मक और प्रभावशाली आयाम:** वास्तविक अर्थों में शिक्षित होने का अर्थ सही सोचने, सही प्रकार की भावनाओं को महसूस करने और वांछनीय तरीके से कार्य करने में सक्षम होना है। इसलिए मूल्य शिक्षा के उद्देश्यों का संबंध व्यक्तित्व विकास के सभी तीन चरणों से होना चाहिए क्योंकि वे सही प्रकार के व्यवहार से संबंधित हैं। चूंकि ये चरण आपस में जुड़े हुए हैं, इसलिए यह सोचना गलत होगा कि मूल्य शिक्षा का संबंध विशेष रूप से केवल ज्ञान, भावना या क्रिया से है। यह कहना कि 'नैतिकता पकड़ी गई है', इसमें शामिल संज्ञानात्मक क्षमताओं और प्रशिक्षण के साथ अन्याय करना है। इसी प्रकार मूल्य शिक्षा को छात्रों को कुछ करने और न करने योग्य बातों का पालन कराने के साथ जोड़ना भावनाओं और नैतिक तर्क की शिक्षा की अनदेखी करने जैसा होगा।

हमें मूल्य शिक्षा की आवश्यकता क्यों है?

शिक्षा को मूल्यों की ओर पुनर्उन्मुख करने का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह तथ्य है कि शिक्षा का वर्तमान मॉडल छात्रों के असंतुलित विकास में योगदान देता है। शिक्षा का यह मॉडल भावनात्मक क्षेत्र की पूर्ण उपेक्षा के बजाय संज्ञानात्मक पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है और सिर और हृदय के बीच अलगाव प्रस्तुत करता है। छात्रों को अत्यधिक प्रतिस्पर्धा की भावना से पोषित किया जाता है और शुरू से ही उन्हें

आक्रामक प्रतिस्पर्धा और संदर्भों से अलग तथ्यों से जुड़ने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उत्कृष्टता के व्यक्तिवादी विचार को भावनात्मक और संबंधपरक कौशल की कीमत पर बढ़ावा दिया जाता है।

- मूल्यों के पतन के बारे में चिंता।
- बच्चों और युवाओं पर परिवर्तन का प्रभाव।
- रंग-कार्यात्मक परिवार, बढ़ते अपराध और हिंसा, मीडिया और सूचना अधिभार का प्रभाव।
- छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों के बीच प्रतिस्पर्धी मानसिकता।

मूल्य शिक्षा का उद्देश्य क्या है:

व्यापक परिप्रेक्ष्य से, मूल्य शिक्षा का उद्देश्य इस बुनियादी सवाल से जुड़ा हुआ है कि शिक्षा स्वयं किसके लिए है। व्यक्तिगत दृष्टिकोण से, इसका उद्देश्य छात्रों को जीवन और कार्य में सफलता के लिए व्यक्तिगत पूर्ति प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। सामाजिक दृष्टिकोण से, शिक्षा का उद्देश्य युवाओं को समाज/राष्ट्र और दुनिया भर में योगदान करने के लिए तैयार करना है। हालाँकि, किसी भी मामले में, शिक्षा को एक परिणाम के रूप में नहीं बल्कि उसमें एक अनुभव के रूप में देखा जाना चाहिए।

मूल्य शिक्षा कैसे प्राप्त करें:

मूल्य शिक्षा को पाठ्यपुस्तक सामग्री द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता है, बल्कि इसे सीखने के संसाधनों को खोजने में शिक्षकों की पहल और प्रेरणा पर छोड़ दिया जाना चाहिए। शिक्षा आवश्यक रूप से शिक्षार्थी को जीवन जीने के लिए मूल्यों को विकसित करने की एक प्रक्रिया है - एक ऐसा जीवन जो समाज के पोषित मूल्यों और आदर्शों के अनुसार व्यक्ति को संतुष्ट करता है। मूल्य शिक्षा ने हमें अपनी अवधारणा को धार्मिक और नैतिक शिक्षा से शांति के लिए शिक्षा में स्थानांतरित करने में मदद की, जो शिक्षा के बड़े संदर्भ में बदलती भावना और संवेदनशीलता के समानांतर है। हालाँकि, मूल्य शिक्षा कुछ तरीकों से प्रदान की जा सकती है।

- व्यक्ति मूल्य संरचना का पहला निर्माण खंड है; एकीकरण के लिए बच्चे की सुरक्षा, गरिमा, पहचान और कल्याण की आवश्यकता को पूरा करना होगा।
- मूल्यों को विकसित करने में दूसरा कारक परिवार है जो एक बच्चे में मूल्यों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संघर्षग्रस्त घर में पलने वाले बच्चे के शांति उन्मुख होने की संभावना नहीं है।
- व्यक्ति जिस समुदाय से संबंध रखता है वह तीसरा ब्लॉक है। व्यक्ति और समुदाय के बीच संबंध घनिष्ठ है। यह किसी व्यक्ति की पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और यह

निर्धारित करता है कि बच्चे को किस स्तर की सुरक्षा प्राप्त है। मूल्यों की शिक्षा समुदायों की असुरक्षा को कम करने और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने में बहुत मदद करती है।

- समाज मूल्यों का चौथा निर्माण खंड है। समाज एक विस्तृत परिवार है जिसकी विशेषता व्यक्तियों की विविधता, परिवारों और समुदायों के हित हैं।
- राष्ट्र मूल्यों का सर्वोपरि निर्माण खंड है। जो देश अपने नागरिकों को नफरत और नकारात्मकता से ग्रस्त होने देता है, वह अपनी ऊर्जा बर्बाद होने देता है। मूल्य प्रगति और कल्याण के लिए बुनियादी हैं। शांति से रहने वाले राष्ट्र वैश्विक मूल्यों के निर्माण खंडों का निर्माण करते हैं।

मूल्य शिक्षा के बदलते आयाम:

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हमेशा से ही शिक्षा की प्रमुख चिंता रही है। हाल के दिनों में, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को अधिक व्यावहारिक शब्दों में परिभाषित किया गया है। यह रोजगार योग्यता का पर्याय बन गया है, काम के लिए तैयारी, शिक्षा के विषय यानी व्यक्तिगत छात्र और एक इंसान के रूप में उसके पूर्ण विकास पर कम ध्यान दिया जाता है। शिक्षा की गुणवत्ता को खंडित रूप में नहीं बल्कि अधिक समग्र और विस्तारित तरीके से माना जाना चाहिए, न कि स्कूली शिक्षा के वर्षों की संख्या के संदर्भ में, बल्कि व्यक्ति के विकास के गुणवत्ता पहलू के संदर्भ में; संपूर्ण व्यक्तियों का निर्माण और मानव का पूर्ण विकास। अस्तित्व और चरित्र निर्माण। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार ही मूल्य शिक्षा का एकमात्र कारण नहीं है। छात्रों के बीच मूल्यों को विकसित करने के एक शक्तिशाली साधन के रूप में शिक्षा में रुचि का वर्तमान पुनरुत्थान हमारे देश में मूल्यों के तेजी से पतन के कारण भी है। काफी प्रगति के बावजूद, हमारा समाज संघर्षों, भ्रष्टाचार और हिंसा से हिल गया है। हमारी मूल्य व्यवस्था में विकृति आ गई है। हम जहां भी देखते हैं, हमें झूठ और भ्रष्टाचार नजर आता है। हममें से अधिकांश लोग अपने स्वयं के परिवारों में रुचि रखते हैं और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में रुचि नहीं रखते हैं। यद्यपि मूल्यों का क्षरण मानव अस्तित्व के पूरे इतिहास में मौजूद रहा है और सभी संस्कृतियों द्वारा साझा किया गया है, लेकिन मूल्यों का वर्तमान पतन हमारे देश में बड़ी चिंता का विषय बन गया है। मूल्य क्षरण के विशिष्ट उदाहरण हैं: लोग लालची और स्वार्थी हो गए हैं।

समाज में ईमानदारी खत्म होने लगी है। हिंसा दिन का क्रम बन गई है। भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार और सत्ता अधिक आम हो गए हैं। मूल्यों में गिरावट की समस्या वैश्वीकरण, भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, शिक्षा के व्यावसायीकरण, जलवायु परिवर्तन के कारण मानवता के लिए खतरे, पर्यावरणीय गिरावट, हिंसा और आतंकवाद जैसी प्रमुख सामाजिक ताकतों के संयोजन से उत्पन्न होने वाली बहुआयामी है। इनसे असुरक्षाएं, व्यक्तिवादी जीवन शैली और इच्छाओं में तेजी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग, निराशावाद, अलगाव

की भावना और अन्य नकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। स्कूल दुनिया के सूक्ष्म जगत हैं। दुनिया की अव्यवस्था कई तरह से स्कूलों में सामने आती है। हमारे देश में बच्चों और युवाओं के बड़े होने की स्थिति बदल गई है और आगे भी तेजी से बदल रही है। हमें यह बताने के लिए वैज्ञानिक सर्वेक्षणों की आवश्यकता नहीं है कि हमारी आंखें और कान क्या बता रहे हैं। बेकार परिवारों की संख्या बढ़ी है। बच्चे स्कूल और बाहर अपराध, हिंसा में लिप्त रहते हैं। मास मीडिया ने हमारे बच्चों को मूर्खतापूर्ण तरीके से जकड़ लिया है, और उन पर सूचनाओं, विचारों और पूर्वाग्रहों से इस तरह हमला करता है कि युवा दिमाग शायद ही समझ सकें या निर्णय ले सकें। जबकि बच्चों में प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, हम पाते हैं कि कई युवा और छात्र शिक्षकों के साथ अनादर का व्यवहार करते हैं और अहंकार के कारण प्रश्न करते हैं और इसे अधिकार से प्रश्न करने के एक तरीके के रूप में देखते हैं। जल्दबाजी करने वाले समाज में अक्सर समुदाय और भाईचारे की भावना का अभाव होता है। सहकर्मियों के विकास पर शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं। नशीली दवाओं का दुरुपयोग, गैर-जिम्मेदाराना यौन व्यवहार, बर्बरता, व्यावसायीकरण, चोरी, धोखाधड़ी, आदर्श के रूप में नायकों और मशहूर हस्तियों के बीच भ्रम पहले से कहीं अधिक बार देखा गया है।

शिक्षा व्यक्तिगत परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन की मुख्य एजेंसी है। जब तक व्यक्ति का परिवर्तन नहीं होगा तब तक समाज में मूलभूत परिवर्तन लाना संभव नहीं है।

हम उन्हें जिस प्रकार की शिक्षा प्रदान करेंगे उसका प्रभाव समाज के मूल्यों पर पड़ेगा। प्रत्येक स्कूल अपने अधीन बच्चों को जो पढ़ा रहा है, उसकी सामग्री और प्रक्रिया की दोबारा जांच की तत्काल आवश्यकता है। हालाँकि मूल्य शिक्षा माता-पिता और सार्वजनिक दोनों की जिम्मेदारी है, लेकिन स्कूल को, अपनी संस्थागत प्रकृति के कारण, प्रमुख जिम्मेदारी लेनी चाहिए। मूल्योन्मुख शिक्षा प्रदान करना स्कूल कर्मियों का दायित्व है। इसे तदर्थ और अव्यवस्थित तरीके से नहीं किया जा सकता है, बल्कि ज्ञान और दूरदर्शिता के साथ एक सचेत और जानबूझकर सुनियोजित उद्यम होना चाहिए।

निष्कर्ष एवं सुझाव:

भारत एक बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुधार्मिक देश है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आने वाले दशकों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का और भी बड़ा विस्फोट देखने को मिलने वाला है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अधिक मानवीय और तर्कसंगत तरीके से अनुप्रयोग नैतिक और नैतिक जिम्मेदारी से संबंधित है। प्रसारित होने वाले मूल्य अक्सर परिवार, समाज या स्कूल द्वारा वांछित मूल्यों के विपरीत होते हैं। मूल्य शिक्षा व्यापक क्षमताओं, दृष्टिकोण और कौशल को बढ़ावा देती है जो न केवल स्कूलों में बल्कि स्कूलों से परे जीवन में भी मायने रखती है, जिससे दुनिया न केवल उनके लिए बल्कि उनके परिवार, दोस्तों,

सहकर्मियों और अन्य लोगों के लिए भी एक बेहतर जगह बन जाती है। मूल्य शिक्षा विद्यार्थी को काम की दुनिया के लिए भी तैयार करती है। कड़ी मेहनत, अनुशासन, सहयोग, संचार कौशल आदि के दृष्टिकोण और मूल्य उन्हें घर और स्कूल में स्वस्थ पारस्परिक संबंध विकसित करने में सक्षम बनाते हैं, जो बदले में व्यावहारिक जीवन में उनके बेहतर समायोजन की सुविधा प्रदान करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. सीथाराम.ए.आर.,(1988) “मूल्य शिक्षा की अवधारणा और उद्देश्य” नई दिल्ली, आकाश प्रकाशन।
2. राव एस.एन.सी. “समाजशास्त्र-सामाजिक विचार के परिचय के साथ समाजशास्त्र के सिद्धांत” नई दिल्ली एस.चंद एंड कंपनी लि.।
3. रेड्डी एस.जी. (2010) मानवीय मूल्य, एडु ट्रैक्स 4(10). 23-26 ।
4. राजपूत, जे.एस. (2002)। “एनसीईआरटी की मूल्य शिक्षा पहल और इसकी भविष्य की दृष्टि” नई दिल्ली: दार्शनिक अनुसंधान परिषद।
5. रोकीच, एम. (1973) “मानवीय मूल्यों की प्रकृति” न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस. ।
6. वेंकटैया, एन. (1998)। मूल्य शिक्षा नई दिल्ली: ए पी एच प्रकाशन निगम।
7. विवेकानन्द, एस. (2011) “शिक्षा पर मेरा विचार” पश्चिम बंगाल: राम कृष्ण मठ और राम कृष्ण मिशन।
8. https://www.academia.edu/2528860/IMPACT_OF_VALUE_EDUCATION_PROGRAMME_AMONG_SCHOOL_STUDENTS_AN_EXPERIMENTAL_STUDY
9. <https://namyapress.com/Books/new-dimensions-of-value-education/>
10. <http://www.valueeducation.org.in>